Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science, Operations & Strategies, (E- ISSN 2456-9305) Vol. 4, Issue, 01. 95-98p, Jan to April 2020

National Research & Journal Publication

Review Article

हिंदी में रोजगारपरक पाठ्यक्रम : एक विश्लेषण

डॉ0 विनीता रानी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

सारांश

यदि ताजा परिस्थितियों पर गौर करें तो यही बात सामने आएगी कि रोजगार के क्षेत्र में भी हिंदी का बड़ा बाजार स्थापित हो चुका है। बढ़ती तकनीकी जरूरतों के मद्देनजर हिंदी ने भी खुद को उसके अनुकूल ढाल लिया है। इनसे भी इस क्षेत्र में मौके बढ़े हैं।

Copyright©2020 डॉ0 विनीता रानी *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

प्रस्तावना

अंग्रेजी के वर्चस्व के बावजूद के हिंदी आज भी आम लोगों की भाषा है और इसकी लोकप्रियता शायद ही कभी कम हो। देश की बहुसंख्यक जनता की शिक्षा का माध्यम हिंदी ही है। चैनलों पर भी इसका वर्चस्व है और प्रिंट मीडिया में भी हिन्दी सिनेमा लोगों के लिए भी एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा हैं। ऑनलाइन पोर्टल्स की भी कोई कमी नहीं हैं। माइक्रोसॉफ्ट जैसी कम्पनी भी हिंदी की ताकत को देखते हुए हिंदी में ऑपरेटिंग सिस्टम शुरू कर चुकी हैं। तात्पर्य यह है कि साहित्य से तकनीक तक हिंदी में काम हो रहा है। ऐसे में हिंदी से संबन्धित डिग्रीयां हासिल करना रोजगार की दृष्टि से पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

कोर्स की कमी नहीं अन्य भाषाओं की भांति हिन्दी में भी कई कोर्स उपलब्ध हैं। देश के अलावा विदेशी विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी की पढ़ाई होती है जिससे मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गुायाना, एशिया महाद्वीप के जापान, चीन, श्रीलंका, मलेशिया, पाकिस्तान थाईलैण्ड, नेपाल, दक्षिणी कोरिया, यूरोप महाद्वीप कें ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा अमेरिका के विभिन्न देशों में हिंदी भाषा का अध्ययन एवं साहित्य का प्रचार हो रहा है।

भारत में डिप्लोमा, बैचलर, मास्टर तथा पी–एच.डी. लेबल पर कई पाठ्यक्रम हैं। इसके आलावा हिंदी ट्रांसलेशन हिंदी जर्नलिज्म आदि से सम्बन्धि पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं।

हिंदी भाषा के पाँच मुख्य रूप हैं। इन पाँचों का समानान्तर विकास करने से हिंदी की सर्वांगीण अभिवृद्धि होगी। समय की मांग है कि इन रूपों से सम्बद्ध रूपों को व्यवहारिक प्रशिक्षण (उपाधि, डिप्लोमा या प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम) के रूप में डाल दिया जाय।

प्रमुख पाठ्यक्रम हैं–

1. **अनुवाद** – यह सम्प्रति सर्वाधिक रोजगारपरक हैं। इसका एक समग्र उपाधि पाठ्यक्रम (एम0ए0 अनुवाद) कई विश्वविद्यालयों में चल रहा हैं जिसमें

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र), अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद आदि। अनुवाद के कुछ आंशिक पाठ्यक्रम भी सम्भावित है, जैसे–

I. **वेटिंग (पुनर्शिक्षण)**– जिसमें अनुवाद के भाषिक स्तर को सुधारने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

II. **रूपांतरण (ट्रान्सफार्मेशन)** – जिसके अन्तर्गत कहानी, कविता – जैसी विधाओं का नाटक रूपांतरण करने या पटकथा बनाने का अभ्यास कराया जाता है।

III. **लिप्यन्तरण (ट्रान्सक्रिप्शन)** – हिन्दी के अनेक ग्रन्थ फारसी – गुरुमुखी आदि लिपियों में लिखे गये हैं। उनको देवनागरी लिपि में लिखना अत्यावश्यक हैं। यह रोजगारपरक कार्य भी हैं।

IV. **डबिंग** – इस प्रशिक्षण द्वारा विभिन्न भाषाओं की श्रेष्ठ फिल्मों के संवादों को अभिनेता के श्रेष्ठ संचालन के अनुरूप हिंदी में बदलना होता है। हिंदी में इसकी बहुत खपत है।

V. **दुभाषिया** – प्रविधि – विदेशों से आये विशिष्ट सभागतजनों के, उनकी अपनी राष्ट्रभाषा में दिये गये सार्वजनिक भाषाओं को द्विभाषा विशेषज्ञ द्वारा समानान्तर प्रस्तुत करने की यह कला (आशु–अनुवाद) अत्यन्त उपयोगी है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में ऐसे अनुवादकों की बड़ी खपत है।

VI. **सारानुवाद** – इसमें स्रोत भाषा के मूल पाठ का सार–संक्षेप प्रस्तुत किया जाता हैं।

VII. **अविकल अनुवाद** – कार्यालयी अनुवाद और विविध अनुवाद शब्द–प्रतिशब्द नीति के अनुसार चलता है। इसके पद विज्ञापित होते रहते हैं।

VIII. **सर्जनात्मक अनुवाद** – यह काव्य, कथा–लेखन, नाट्य–रचना आदि विधाओं के अनुरूप मूलपाठ को अपनी भाषिक प्रकृति के अनुकूल छायानुवाद रूप में प्रस्तुत करता हैं।

IX. **भावानुवाद** – इसके माध्यम से विचारपरक कृतियों का हिंदी में भावान्तरण किया जा सकता है। यह ज्ञान–विज्ञानपरक अनुवाद के लिए प्रयोजनीय हैं।

2. शब्दावली निर्माण– अनुवाद के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली का संज्ञान प्राप्त करना और उसके निर्माण के प्रक्रिया को समझना अनिवार्य हैं। इसके विशेषज्ञों की खपत वैज्ञानिक तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली आयोग, नई दिल्ली में निरन्तर सम्भावित हैं।

3. कोश – विज्ञान – इसके अन्तर्गत शब्दकोश (द्विभाषी, त्रिभाषी, बहुभाषी) समानान्तर कोश, उद्धरण –व्यत्पत्तिकोश, लोकोक्ति – मुहावरा कोश, संदर्भ कोश, पात्र–चरित्र कोश, इतिहास पुराण कोश, सूक्तिकोश, विचार कोश, विश्वज्ञान कोश आदि के निर्माण की प्रविधि दिखाई जाती है।

4. सम्पादन कला–इसके मुख्य तीन प्रकार हैं–

a) समाचार सम्पादक –(अखबार, रेडियों एवं टी0वी0 हेतु)
b) पत्रिका (मासिक, त्रैमासिक, षट्मासिक) सम्पादन
c) ग्रंथ सम्पादन –(सामूहिक लेख)

5. मीडिया लेखन– जनसंचार – माध्यमों के अनुरूप इसके तीन रूप हैं–

A. अखबारों के लिए – समाचार लेखन इण्ट्रों, शीर्षकीकरण, अग्रलेख, सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज समीक्षा आदि।
B. रेडियो के लिए – ध्वनिरूपक तथा झलक की पटकथा, संवाद, रेडियावार्ता, फीचर, रिपोर्ताज, समीक्षा आदि।
C. टेलीविजन के लिए – धारावाहिक, वृत्तचित्र, डाक्यू ड्रामा, ऐडफिल्म, फिचर फिल्म आदि के उपयुक्त पटकथा, संवाद तथा मुखड़ा तैयार कराना, साथ ही फीचर, रिपोर्ताज, समीक्षा आदि का लेखन।

6. वाचन कला – मंच पर कविता या कहानी पढ़नी हो या मीडिया में कमेण्ट्री, कंपेयरिंग, उद्घोषणा और 'ऐंकरिंग' करनी हो– इस प्रशिक्षण की उपयोगिता असदिग्ध है।

7. वैचारिक लेखन – ज्ञानविज्ञानपरक, परीक्षापयोगी सन्दर्भ सामग्री का हिंदी में अधिकाधिक लेखन अभीष्ट है। इसका प्रशिक्षण कार्यशालाओं में दिया जाता है।

8. सम्भाषण कला – इसके द्वारा वक्तव्य देते हुए आरोहावरोह 'वाल्यूम', आर0पी0एम0 यति, गति पाज आदि का विधान सिखाया जाता है।

9. देहभाषा (बाडी लैंग्वेज) – यह भाषा वाचिक – अवाचिक दोनों रूपों में वक्ता के हाव, भाव, अनुभाव का पूर्ण सम्प्रेषण कराने का रियाज कराती हैं।

10. सी0डी0 निर्माण– हिंदी भाषा से सम्बद्ध कैसेट्स, सी0डी0, वेबसाइट आदि का निर्माण करके उनका विपणन करना सर्वथा लाभप्रद हैं।

11. समारोह–प्रबन्धन– हिंदी भाषा – साहित्य से सम्बन्धित समारोहों की समूची व्यवस्था कराना 'इवेण्ट मैनेजमेण्ट' का एक उद्योग बन गया है। यह स्वरोजगार का अच्छा निमित्त हैं।

12. संकलन– लोक–साहित्य, शब्दावली और सूक्तियों का संग्रह करना अर्थोपार्जन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। इसका परिविस्तार 'कम्प्यूटर बुक्स' में संभावित हैं।

13. प्रकाशन – हिन्दी–कृतियों का मुद्रण, प्रकाशन, वितरण, सर्वथा लाभप्रद उद्योग हैं। इसमें सम्पादक, प्रूफ रीडर, विक्री एजेण्ट आदि कई पदों की गुंजाइश हैं।

14. टंकण – इसमें नौकरी की सम्भावना बराबर विद्यमान रहती हैं।

15. हिन्दी – सुलेख – यह भी एक बाजारोपयोगी कला है। इसके सहारे नये–नये फाण्ट का विकास भी सम्भावित है।

16. सूचना –संदर्भ – केन्द्र का संचालन – हिंदी इण्टरनेट के सहारे शोध–विषयों, सन्दर्भ–ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं, संस्थाओं और हिंदी – जगत् की समूची गतिविधियों की जानकारी देने वाले 'कालसेण्टर्स' भुगतान लेकर सूचनाएँ देने का कार्य शुरू कर दें तो यह कार्य स्वार्थ–परमार्थ, दोनों दृष्टियों से सराहनीय सिद्ध होगा।

17. विज्ञापन एवं प्रचार – साहित्य लेखन – सम्प्रति पैंफ्लेट, बुकलेट, लीफ्टलैट, पोस्टर, बैनर, होडिंग, स्टिकर आदि में उपयुक्त नारा (स्लोगन), सन्देश और प्रोक्ति प्रस्तुत कराना अत्यन्त लाभप्रद है। इसमें 'कापीराइटिंग' का अभ्यास करके विज्ञापन एजेन्सी तथा जनसम्पर्क – कार्यालयों में रोजगार प्राप्त किया जा सकता हैं।

18. कम्प्यूटरीकरण – इसके अन्तर्गत वेब पोर्टल, ई–मेल, एस0एम0एस0, सर्च इंजन, शब्द संसाधन, डाटा प्रविष्टि स्लेपचेक, भण्डारण आदि भाषिक कार्यक्रम प्रशिक्षण साध्य हैं।

उपर्युक्त दो दर्जन पाठ्यक्रमों में अनेक प्रशिक्षण हिंदी – जगत् में चल रहे हैं। इन्हें व्यवस्थित करना, नई पीढ़ी को इनके ओर आकृष्ट कराना और इस प्रकार इस प्रचण्ड भौतिकी प्रवाह में हिंदी की अस्तित्व – रक्षा करना हम सबका आपर्ध्य है।

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी रोजगार का बड़ा बाजार निबन्ध है।
2. राष्ट्रभाषा सन्देश, भाग 36, फरवरी, 2016 पेज न. 2 व 3।
3. मीडिया की भाषा–लीला– रविकान्त।